International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 22-06-2019; Accepted: 23-07-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 5; September 2019; Page No. 44-46

‘कोणार्क’ नाटक में ऐतिहासिकता

प्रियंका द्विवेदी
P.hd. शोधछात्रा M.A/M.phi, मुंबई विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र, भारत

प्रस्तावना

“सूरज के किरणों की जब आज भी लालीमा छाती है
‘कोणार्क’ की भव्यता देख कर उसे और भव्य बनती हैं
इतिहास रमा हैं भग्न मंदिर के कण-कण में,
जो लोगों को अपनी गाथाएं सुनाती हैं”

हमारा भारत देश हर क्षेत्र में एक समृद्ध देश रहा हैं | चाहे वह संस्कृति के क्षेत्र में हो, चाहे वह विज्ञान क्षेत्र में भारत देश ने हर रूप में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है| अगर हमारी भारतीय धरोहर की बात करें तो देश के हर हिस्से में ऐतिहासिक स्थल, प्राचीन किल्ले और भव्य महल देखने को मिलते हैं और उनसे जुड़ी कुछ किवदंतियां, कथाएं भी प्रचलित है| यूनेस्को द्वारा अब तक भारत के 38 जगहों को विश्व धरोहर की सूची में शामिल किया है, जिसमें से उड़ीसा का सबसे प्रसिद्ध मंदिर ‘कोणार्क’ भी स्थित है | इस मंदिर के विषय में कहा गया है कि “इस मंदिर को ‘ब्लैक पैगोडा’ नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि मंदिर का ऊंचा टॉवर काला दिखायी देता है। कोणार्क के सूर्य मंदिर को यूनेस्को ने 1984 में विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता दी है।”[1] यह मंदिर अपने आप में बहुत प्रचलित मंदिर एवं प्राचीन माना गया है इस मंदिर को सूर्य देवता को समर्पित करने के लिए निर्माण कराया गया था| इस मंदिर के साथ जुड़े कुछ कथाएं अधिक प्रचलित है लेकिन इसमें सच्चाई कहाँ तक है इसका कोई प्रमाण नहीं है|

इस मंदिर की कथाओं के माध्यम से लेखक जगदीशचंद्र माथुर ने ‘कोणार्क’ नाटक की पृष्ठभूमि तैयार की है जो इस नाटक के कथावस्तु का आधार है | कह सकते हैं भारतीय हिंदी साहित्य में नाटक एक अद्भुत विधा मानी जाती है, क्योंकि इसे न कि पढ़ा जाता है बल्कि इसे हम रंगमंच पर देख सकते हैं और प्रसिद्ध नाट्यशास्त्र आचार्य ‘भरतमुनि’ ने नाटक को ‘पंचम वेद’ कह कर संबोधित दिया है| कोणार्क नाटक को जब भी रंगमंच पर कलाकारों द्वारा दर्शाया गया है, मानों इस नाटक की शोभा और शिल्प और भी अद्भुत निखर कर सामने आई हैं| नाटक की ऐतिहासिकता को लेकर लेखक ने नाटक के पात्रो को जीवंत कर दिया हैं और पढ़ते समय मानों कोणार्क मंदिर के बारे में जानने की उत्सुकता और भी पाठकों के मन में उद्वेलित हो जाती हैं|

जगदीश चंद्र माथुर एक बहुत बड़े समृद्ध साहित्यकार तथा नाटककार के रूप में माने जाते हैं| अब तक इनके तीन नाटक ‘शारदीया’, ‘कोणार्क’, ‘पहलाराजा’ अधिक प्रचलित हैं और उसमें से ‘कोणार्क’ नाटक के कारण ही इन्हें अधिक ख्याति प्राप्त हुई हैं| इन्होंने आकाशवाणी में कार्य करते हुए साहित्य के क्षेत्र में लेखन का कार्य निरंतर किया है और साहित्य को विकास तथा समृद्ध करने में अपना योगदान दिया| इसके साथ-साथ उन्होंने रंगमंच का निर्माण, अभिनय, निर्देशन से भी सफलता मिली है| अपने लेखन के कार्य के साथ-साथ हिंदी साहित्य के महान विगत रचनाकार साहित्यकार सुमित्रानंदन पंत, दिनकर, बालकृष्ण नवीन जैसे अद्भुत साहित्यकारों के साथ सांस्कृतिक पुनर्जागरण में अपना सयोग दिया है|

हमारी भारतीय ऐतिहासिक धरोहर ही विश्व में भारतीय संस्कृति को लोगों के प्रति आकर्षित करती हैं| इस नाटक को कई जगह पर मंचन करके हमारे वास्तुकला को जगत में दर्शकों के समस्त रूबरू कराया है| हाल ही में ‘कॉलएजेंट ड्रामा सोसायटी’ दिल्ली की ओर से हरियाणा पुलिस अकादमी मधुबन के हर्षवर्धन सभागार में कोणार्क नाटक का प्रस्तुत किया गया |”[2] कोणार्क नाटक के कथावस्तु से नाटककार के लेखनी की अद्भुत क्षमता हमारे समक्ष प्रस्तुत होती है| इसे नाटककार ने ऐतिहासिक तथ्य तथा किवदंतियों के सहारे नाटककार ने वस्तु योजना का ताना-बाना बुना है | लेखक ने स्वं कहते हैं कि, मंदिर क्यों टूटा-इस विषय में उड़ीसा में एक किंवदन्ती प्रचलित है, जिसे अंशतः ही अपने नाटक का आधार बनाया हैं इतिहास का सहारा भी मैंने अल्प मात्रा में ही लिया है, फिर भी इस नाटक को पूर्णतया अनैतिहासिक नहीं कहा जा सकता”[3] भले ही लेखक ने इतिहास को अंश ही लिया है लेकिन इस नाटक से हमे इतिहास को जानने की और भी जानकारी हासिल करने के लिए मन में प्रेरणा जागृति हो उठती है और यह नाटक का सबसे मजबूत हिस्सा होता है|

इसके पहले भी हमारे समक्ष जयशंकर प्रसाद एक ऐसे नाटककार के रूप में समृद्ध है, जिन्होंने कई नाटक ऐतिहासिकता को लेकर हमारे समक्ष अद्भुत नाटकों को प्रस्तुत किया है, लेकिन उनके नाटकों में अधिक तत्सम शब्दों की उद्भावना तथा अधिक गीतों के कारण ही दर्शकों के ह्रदय में पूर्ण रूप से स्थापित नहीं हो पाती उसमे मात्र ऐतिहासिकता की मात्रा अधिक होती है, लेकिन संवेदनात्मक रूप से दर्शकों में जुड़ नहीं पाती लेकिन जगदीश कुमार माथुर के नाटक कुशलता देखकर उसे पढ़ने के बाद पाठक के मन में एक प्रकार की उत्सुकता जाग उठी है| इस विषय में डॉ गोविन्द चातक ने कहा है – “प्रसाद की नाट्य परंपरा का उन्होंने अन्धानुकरण न कर उसे उचित अनुपात दिया हैं| रचना के नवीन स्तर पर इसका एक अच्छा परिणाम यह निकला कि, वे प्रसाद की अतिशय भावुकता, दार्शनिकता, ऊहापोह, भाषा के बोझिलपन तथा कथानक और चरित्र की संकुलाताओं से बच गए, किन्तु इनकी भावमयी आत्मा का निथार उनकी नाट्य - कृतियों में रस-बस कर ही रह गया जिससे समसामायिक यथार्थवादी लेखन के बीच ‘कोणार्क’ को अद्भुत वैशिष्ट्य प्राप्त हुआ”[4]

जगदीश कुमार माथुर द्वारा यह नाटक 1946 में लिखा गया था और इसका प्रथम संस्करण 1951 में प्रकाशित हुआ परंतु 12 वर्ष के बाद 1961 में लेखक ने पुनः संशोधन करके इस नाटक में कुछ परिवर्तन किए| इस नाटक में पुनः संशोधन करने का कारण बताते हुए जगदीश कुमार माथुर लिखते हैं “ श्री.टी.एन रामचंद्र ने एक लेख में जो सन 1951 में मद्रास संगीत अकादमी के जनरल में प्रकाशित हुआ था| इस लेख में उन्होंने कोणार्क मंदिर से प्रसिद्ध कुछ मूर्ति का उल्लेख किया है जिसके नीचे नाटकचार्य ‘सौम्य श्रीदत्त’ का नाम लिखा हुआ है, उनके अनुसार ‘सौम्य श्रीदत्त’ कोणार्क-मंदिर के नाट्याचार्य रहे होंगे: मूर्ति की मुद्रा एवं अन्य विशेषताओं से यह सिद्ध होता है| इस एक मूर्ति का चित्र भी उन्होंने मेरे पास भेजा | मूर्ति के गले में हार है, जिसके बीच में एक बड़ा-सा चक्र हैं | हाथों में मंजीर, कानों में मकरकुंडल, किंतु कलाई में वीर-श्रृंखला का अभाव | यदि इस मूर्ति के विषय में मुझे पहले से जानकारी होती तो संभवतः नाटक के कथानक में एक और तत्वों का आरोप होता| फिर भी मैं सौम्य श्रीदत्त को अपने नाटक में किसी-न-किसी रूप में प्रस्तुत करने की लालसा को दबा न सका| मूल संस्करण में मुकुंद नाम का एक कल्पित पात्र स्थपति का मित्र दिखाया गया है| इस संशोधित संस्करण में उस कल्पित पात्र के स्थान पर सोम्य श्री दत्त को मैंने दिखा दिया है”[5]

कोणार्क इस प्रकार लेखक ने इस कथावस्तु को रचना करते समय ऐतिहासिकता को पूर्ण रूप से लाने की कोशिश की है |

इस मंदिर को बनाने के पीछे जो कुछ पौराणिक कथाये इस प्रकार जुडी हुई है वह इस प्रकार हैं "पौराणिक कथा के अनुसार, भगवान कृष्ण के पुत्र साम्ब को उनके श्राप से कोढ़ रोग हो गया था। सूर्यदेव, जो सभी रोगों के नाशक थे, उन्होंने इनके इस रोग का भी निवारण कर दिया था। तब साम्ब ने सूर्य देव को सम्मानित करने के लिए कोणार्क सूर्य मंदिर को निर्मित किया, क्योंकि भगवान ने उनके कुष्ठ रोग को ठीक कर दिया था।"[6] लेकिन इस बात का कोई भी प्रमाण नहीं हैं इसी कारण लेखक ने पुराणिक कथाओ को आधार नहीं माना है, उन इतिहास को उठाया है, जो पूर्ण रूप से सही हो, इस मंदिर के निर्माण को लेकर लिखते है "गंगवंषीय महाप्रतापी राजा नरसिंह देव का उड़ीसा में राज्यकाल इसवी सन १२३८ से १२६४ तक माना जाता हैं और कुछ जागीरों के लेख-पत्रों में स्पष्ट रूप से कहा गया हैं कि, नरसिंहदेव ने ही कोणार्क का निर्माण कराया है"[7] और उस समय के दरबारी कवी इनके विश्वनाथ (साहित्य दर्पण) थे| इस तथ्य की प्रमाणिकता बताते हुए लेखक कहते हैं "प्रसिद्ध कवि विश्वनाथ ने अपनी अलंकारशाश्त्र की पुस्तक 'एकावली में नरसिंह देव को 'यवनावालिवल्लभ' कहकर संबोधित दिया है"[8] इस प्रकार 'कोणार्क' नाटक के लेखन में विभिन्न तथ्यों को संकलित किया है और पत्रों को तथ्यों के अनुसार ही नाटक का हिस्सा बनाया हैं |

इस मंदिर की भव्यता को लेकर ऐतिहासिक तथ्य विचारनीय है| लेखक ने बताया हैं कि, "मध्यकालीन उड़ीसा के मंदिरों की परंपरा में यह अन्तिम भवन हैं| इसके न जाने कैसे क्यों उड़ीसा में उस कोटि और शैली के मंदिरों का बनना ही बंद हो गया है| शिल्पियों के कुल ही तिरोहित हो गए है"[9] इस मंदिर के बनने से ज्यादा इस मंदिर का खंडित रूप रहस्यमयी हैं| उड़ीसा के अन्य मंदिरों में किसी भी मंदिरों की इस अवस्था में नहीं है, जो यह मंदिर को पूर्ण रूप से खंडित अवस्था में देखा गया है| जगदीश माथुर का कहना है कि "वैज्ञानिकों का मत है कि, यह मंदिर कभी व्यवहार में लाया ही नहीं गया मंदिर का मुख्य भाग इस समय पत्थरों का ढेर है| उसका नेट मंदिर भी धराशाई है| विशाल प्रांगण में ध्वस्त मूर्तियां और पाषाण खंड पड़े हैं| केवल बाकी है विमान में तथा हुआ जब मोहक यानी मंडप जो एक विस्तृत में जी पर दीपक की अकेली ली की भांति खड़ा है"[10] लेखक ने कोणार्क मंदिर के विद्ध्वंस को लेकर कथावस्तु को ऐतिहासिक बनाया है लेकिन उसमे कल्पना भी समाहित है

इस नाटक को लेखक ने तीन अंको मे विभाजित किया है | प्रथम अंक राजा नरसिंह के सपनो को पूर्ण करने के लिए शिल्पकार विशु बारह सौ शिल्पकारियों को लेकर बारह वर्ष की साधना के पश्चात्य एक भव्य मंदिर कोणार्क का निर्माण करता हैं, परन्तु मंदिर के शीर्ष पर अभी तक कलश स्थापित करने में असमर्थ रहता है | इस कथा वास्तु में लेखक ने विशु और सारिका के प्रेम का वर्णन किया हैं| सारिका के गर्भवती होने के पाश्चात्य विशु उसे छोड़कर चला जाता हैं| सारिका मेहनत मजदूरी कर के धर्मपद का पालन पोषण करती है| धर्मपद किशोर होने के पाश्चत्य मंदिर की भव्यता को सुनकर वह उसे देखने आ जाता है| मंदिर की भव्यता को तथा उसके अपूर्ण होने के कारण जानकार वह पूर्ण करने के लिए आगे बढ़ता हैं-कहता है "इसके हरेक पटल को फिर से इस तरह रखा जाए कि, बाहरी हिस्सा है वह अन्दर केंद्र पर हो और जो नुकीला भाग हैं, वह बाहर निकले तो उसकी की आकृति खिले कमल की-सी हो जाएगी, कली की-सी नहीं लेकिन कलश स्थिर रहेगा"[11] इस प्रकार धर्मपद के सूझ-बूझ और प्रखर बुद्धि को देखकर सभी शिल्पकारी चकित हो जाते हैं और उनकी जय-जयकार करने लगते हैं| दूसरे अंक में लेखक ने युद्ध का वर्णन किया है| मंदिर को पूर्ण निर्माण होने के पश्चात यह खबर राजा नरसिंह को मिलती है और उसे देखने के लिए स्वयं वह मंदिर आ जाते है वहां पर महामात्य जो शिल्पकारियों के ऊपर अत्याचार करके उनके जमीन को हथियार लेता है| यह सारी खबर राजा को पता नहीं रहती क्योंकि राजा बाहर की युद्धों में व्यस्त रहते है और मंदिर के देख-रेख के लिए महामात्य को कह देता है | शोषण के प्रति राजा को जानकारी होती है तब वह सभी को उसका जमीन दे देते हैं लेकिन महामात्य वहां पर गद्दारी करता है और अपने आप को राजा घोषित कर आक्रमण बोल देता है और राजा को आत्मसमर्पण करने के लिए वह मजबूर कर देता है लेकिन धर्मपद की यहां पर उसकी बुद्धि और पौरुषता से काम लेता है वह हजारों शिल्पकरों को लेकर युद्ध करता है लेकिन उस युद्ध में धर्मपद घायल हो जाता है और अपनी बलि दे देता है लेकिन अंत में विशु को मालूम हो जाता है कि धर्मपद उसी का ही पुत्र है तो वह पुत्र वियोग में अत्यंत भावुक हो जाता है और प्रतिशोध के रूप में कोणार्क मंदिर अत्याचारों के हाथ न लगे इसलिए अपने हाथों से उस मंदिर को विध्वंस कर देता है विध्वंस करते समय वह भावुक होकर कहता है "तोड़ रहा हूँ सोमू, मैं चुंबक छोड़ रहा हूं..... देवमूर्ति भी गिरेगी और शिखर भी| और फिर (पुनः कुदाली का आघात) और फिर मंदिर की सारी छत और दीवारें नीचे गिर पड़ेंगी मेरे ऊपर, तुम्हारे ऊपर, इन नीचे विश्वासघातियों के ऊपर कोणार्क टूटेगा... हा-हा-हा"[12] इस प्रकार कोणार्क मंदिर अधूरा की अधूरा ही रह जाता है| लेखक ने नाटक का अंत अत्यंत ही दुखांत रूप से किया है |

इस प्रकार लेखक ने नाटक को ऐतिहासिक बनाकर अद्भुत रूप से प्रस्तुत किया है| इसकी भव्यता और बनावट को देखकर एक उद्धरण द्रष्टव्य है - "इस मंदिर के प्रत्येक दो पत्थरों के बीच एक लोहे की चादर लगी है, मंदिर के ऊपरी मंजिलों का निर्माण लोहे की बिम्बों से हुआ है मुख्य मंदिर की चोटी के निर्माण 52 चुंबकीय लोह का उपयोग हुआ है| मंदिर का पूरा ढांचा इसी चुम्बकीय लोह की वजह से समुद्र की गतिविधियों को सहन करता है"[13] और भी मंदिर की विशेषताओं को लेकर कहा जाता है कोणार्क मंदिर को "सूर्य की पहली किरण सीधे मुख्य प्रवेश द्वार पर पड़ती है| सूर्य किरणे मंदिर पार होकर सीधे मंदिर की मूर्ति के केंद्र में प्रतिबिंबित होकर चमकदार दिखाई देते हैं"[14] सूर्य देव को समर्पित यह मंदिर आज भी खंडित रूप में है लेकिन इसकी भव्यता आज भी उतनी ही अद्भुत दिखाई देती है और पर्यटन को मोहित कर देती है|

सन्दर्भ सूची

1. https//hindiholidyrider.com
2. www.bhaskar.com दैनिक भास्कर न्यूज़
3. पृ.क्र १४, कोणार्क जगदीशचंद्र माथुर, राधाकृष्ण प्रकाशन
4. पृ. क्र १८,समकालीन नाट्य विवेचन, डॉ. माधव सोनटक्के, विकाश प्रकाशन
5. पृ. क्र. १०, कोणार्क, जगदीशचंद्र माथुर, राधाकृष्ण प्रकाशन
6. https//hindiholidyrider.com
7. पृ.क्र १४, कोणार्क, जगदीशचंद्र माथुर, राधाकृष्ण प्रकाशन
8. पृ.क्र १४, कोणार्क, जगदीशचंद्र माथुर, राधाकृष्ण प्रकाशन
9. पृ.क्र १३, कोणार्क, जगदीशचंद्र माथुर, राधाकृष्ण प्रकाशन
10. पृ.क्र १३, कोणार्क, जगदीशचंद्र माथुर, राधाकृष्ण प्रकाशन
11. पृ.क्र ४१, कोणार्क, जगदीशचंद्र माथुर, राधाकृष्ण प्रकाशन
12. पृ.क्र ८० कोणार्क, जगदीशचंद्र माथुर, राधाकृष्ण प्रकाशन
13. https//hindiholidyrider.com

14प https//hindiholidyrider.com